अर्हम

पिछले कुछ समय से पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शारीरिक स्वास्थय में कुछ कठिनाइयां हो रही हैं। दिनांक 21 मार्च 2008 को आचार्य श्री की शारीरिक स्थिति गम्भीर बन गई। डॉ. नरपत सिंघवी (ब्यावर) से जांच कराई गईं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष सावधानी की अपेक्षा है।

दिनांक 23 मार्च 2008 को डॉ. पोखरना ने जांच की, रिपोर्टों को देखा, उसमें अनेक बीमारियां सामने आ गई। अतः उपयुक्त विश्राम और चिकित्सा की अपेक्षा समझी जा रही है। इस दृष्टि से पूज्य प्रवर ने जयपुर प्रवास करना समुचित माना है। आचार्य प्रवर का तनुरत्न पूरे धर्मसंघ की बहुमूल्य सम्पत्ति है। उसकी सुरक्षा का प्रयास हमारा परम कर्तव्य है। अतः पूज्यप्रवर के इंगितानुसार यह निर्णय किया जा रहा है–

"द्रव्य, क्षैत्र, काल, भाव आदि की अनुकूलता की स्थिति में मेवाड़ की यात्रा को स्थगित कर दिनांक 27 मार्च 2008 को टॉडगढ़ से जयपुर की ओर विहार करने का भाव है।"

जयपुर प्रवास निर्धारण के साथ यह भी निर्णय लिया जा रहा है कि पूज्य गुरूदेव श्री महाप्रज्ञ मेवाड़ में 2008–09 के लिए घोषित निम्नांकित कार्यक्रम नहीं कर सकेंगे।

2008	महावीर जयन्ती	शिशोदा
2008	अक्षय तृतीया	रींछेड़
2008	आचार्य श्री तुलसी महाप्रयाण दिवस	सम्बोधि
2008	महाप्रज्ञ जन्मोत्सव	कांकरोली
2008	चातुर्मास	केलवा
2009	मर्यादा महोत्सव	आमेट

प्रज्ञा शिखर, टॉडगढ़
दिनांक 25 मार्च 2008

आचार्य श्री की निश्रा में
युवाचार्य महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ के स्वास्थ्य को लेकर देश भर के श्रद्धालुओं में चिन्ता का वातावरण

आचार्य श्री का स्वास्थ्य चिन्ताजनक नहीं–मुनि जयन्त

दर्शनों के लिए उमड़े श्रद्धालु

टॉडगढ़ (अजमेर) 26 मार्च 2008

अहिंसा यात्रा के प्रणेता एवं तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के स्वास्थ्य को लेकर देशभर के जैन–अजैन श्रद्धालुओं मे चिन्ता का वातावरण बना हुआ है और श्रद्धालु टॉडगढ़ में पहुंच रहे हैं। देश के विभिन्न समाचार पत्रों के विविध न्यूजों से बने उहापोह के महौल एवं सारी अटकलों पर विराम लगाते हुए तेरापंथ मीडिया से अधिकृत तौर पर जारी प्रेस विज्ञप्ति में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के शिष्य मुनि जयन्त कुमार ने बताया कि आचार्य श्री के स्वास्थ्य में गिरावट जरूर है पर चिन्ताजनक नही है, उन्होंने बताया कि चिकित्सकों के परामर्श पर स्वास्थ्य परीक्षण एवं समुचित चिकित्सा के लिए जयपुर पधारेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ 4 अप्रेल को ब्यावर में
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ 27 मार्च को अजमेर जिले के टॉडगढ़ से जयपुर के लिए विहार करेंगे। उक्त घोषणा करवाते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि 27 को टॉडगढ़ से विहार कर फूतियाखेडा, 28 को कुकरखेडा, 29 को नंदावट, 30 को ढोलभाटा, 31 को बारलाचोड़ा, 1 अप्रेल को सूरजपुरा होते हुए 3 को नरबतखेड़ा तथा 4 को ब्यावर पधारेंगे। अप्रेल के अंतिम सप्ताह तक पूज्य प्रवर के जयपुर पहुंचने की संभावना है।

महानगरों से पहुचे श्रद्धालु
आचार्य महाप्रज्ञ के स्वास्थ्य एवं जयपुर की तरफ विहार की खबर मिलते ही सूरत, अहमदाबाद, मुम्बई, कोलकाता, चैन्नई, उदयपुर, आसीन्द, दौलतगढ़, राजसमन्द, सिरीयारी, केलवा एवं टॉडगढ़ के आसपास के क्षेत्रों से बड़ी तादात में श्रद्धालु पहुंचे जिन्हें स्वयं आचार्य महाप्रज्ञ ने दर्शन एवं आशीर्वाद दिया।

जयपुर चातुर्मास की अर्ज
अहिंसा यात्रा प्रणेता राष्ट्रसंत के जयपुर पधारने की घोषणा के साथ ही वहां के श्रद्धालु संघ के रूप में चातुर्मास की अर्ज लेकर उपस्थित हुए। संघ में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष पन्नालाल बैद,भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर के अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, तेयुप के मंत्री सुधीर चोरड़िया, कल्याण मित्र राजकुमार बरड़िया, ओमप्रकाश जैन, अमरसिंह पारख, डी. जी. अरूण दूगड़, शिक्षा समिती के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ व्यवस्था समिती के पूर्व अध्यक्ष दौलत डागा, राजेंद्र बरड़िया सहित बड़ी तादाद में चातुर्मास हेतु जोरदार अर्ज की।

महासभा के पदाधिकारी गुरु चरणों में
तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा महामंत्री विनोद चौरड़िया चीफ ट्रस्टी चैनरूप चिण्डालिया सहित संपूर्ण पदाधिकारी पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ के चरणों में उपस्थित हुए।

कोटा सभा के नव पदाधिकारियों ने लिया आशीर्वाद
कोटा से तेरापंथ सभा की नवगठित टीम नें आचार्य प्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। पूर्व अध्यक्ष रतनलाल जैन, नव अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री सुनील बाफना, उपाध्यक्ष टीकम नाहटा, रवि बुच्चा कार्यकारिणी सदस्य कमलेश बोथरा ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ को कोटा में समणी केंद्र घोषित करने की अर्ज की।

गुरू की आज्ञा के अनुरूप होता है हमारा कार्य – युवाचार्य महाश्रमण

टॉडगढ़ (अजमेर) 26 मार्च 2008

युवाचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ मीडिया एवं पत्रकारों से विशेष बातचीत में स्वयं का चातुर्मास केलवा में करने के संदर्भ में पूछे गए प्रश्न के जवाब में कहा कि जैसी गुरू की आज्ञा होती है, वैसा ही हमारा कार्य होता है एवं उसी के अनुरूप चतुर्मास और विहार करते हैं। उन्होंने पत्रकारों के सम्मुख प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा कि क्या गुरू को बीमारी की अवस्था में छोड़कर दूर जाना शिष्य का कर्तव्य है ? उन्होने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के प्रशासनिक कार्यों को गुरूदेव संचालित करते हैं। उनके अस्वस्थ होने पर, उन कार्यों के संचालन से मैं जुड़ा हुआ हूं। इस दृष्टि से और गुरूदेव को विश्राम में मेरा योगदान रहे इसलिए दूर रहना उचित नहीं लगता। इस अवसर पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ नें पत्रकारों के माध्यम से श्रद्धालुओं से स्वास्थ्य के संबंध में चिंता न करने का आह्वान किया और उचित उपचार चल रहा है।